9. आत्मकथा

- भीष्म साहनी

इस पाठ से भीष्म साहनी जी के जीवन की कई घटनाओं का परिचय प्राप्त होता है। इनसे छात्रों को आत्मविश्वास बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है।

बचपन का माहौल अंधेरी गुफ़ा जैसा लगता है। मैं अक्सर बीमार रहता था, और उस खेल-कूद से वंचित था, जो बचपन का अधिकार है। खाट पर पड़ा सरकती धूप को देखता रहता, गली में सिरहाने के नीचे रखी रेजगारी की ढेरियाँ बनाना चाहता था। माँ की गोद में सिर रखकर अपार सुख मिलता था। शाम के झुटपुटे में माँ के मुँह से सुने कवित्त, गीत, कहानियाँ, जिनमें अक्सर गहरा अवसाद भरा रहता था, मेरे रोग के साथी थे। स्वस्थ, हँसते-खेलते लड़कों को ईर्ष्या की नज़र से देखता था। अन्य बालकों की तुलना में अपने को छोटा और असमर्थ समझने लगता था। और लोग स्वस्थ थे, मैं बीमार था ; और लोगों के चेहरे चमकते थे, मेरे चेहरे पर पीलिमा पुती रहती थी ; और लोग तरह-तरह के करतब कर सकते थे, मैं उन्हें केवल चकित आँखों से देख भर सकता था। गोरे-चिट्टे दमकते चेहरों वाले, स्वस्थ तथा व्यवहार-कुशल व्यक्ति मुझे 'हीरो' जैसे लगते थे, जो आत्मविश्वास के साथ हर काम सुभीते से कर जाते हैं।

पर मेरी निःसहायकता सारा वक्त मेरे दिल को मथती रहती। अन्दर ही अन्दर मेरा धैर्य चुकने लगता। इसलिए जब बिस्तर पर से उठता तो भाग खड़ा होता। घर में से निकलते ही किसी ताँगे के पीछे भागता और कूदकर पायदान पर चढ़ जाता। फिर ताँगा सड़कें लाँघता हुआ जाता और मैं एक सड़क से दूसरी सड़क, एक बाज़ार से दूसरे बाज़ार, पागलों की तरह आसपास के नज़ारे देखता हुआ जाने कहाँ से कहाँ पहुँचता था। उस दिन घर लौटता तो फिर बिस्तर पर पड़ जाता था, बुरी डाँट खाता और मेरे घूमने-फिरने पर बन्दिश लग जाती।

KTBS Not to be republished

देश के बदलते माहौल से भी मैं अछूता नहीं रह गया था। एक अवसर याद आता है – मैं और मेरे अध्यापक कैण्टोनमेण्ट में एक दिन सैर कर रहे थे। देर तक घूमते रहने के बाद एक रेस्तराँ में चाय पीने बैठ गये। रेस्तराँ गोरे फौजियों से खचाखच भरा था। रेस्तराँ का मालिक कोई चीनी व्यक्ति था, जिसे पसीना पोंछने की फुर्सत नहीं थी। लगभग आधे घण्टे तक हम चाय का इंतज़ार करते रहे, हमें चाय नहीं मिली जबकि बाद में आने वाले गोरे फौजियों को सर्व किया जा चुका था। यह स्पष्टतः जाति-भेद था। हम ही दो हिन्दुस्तानी रेस्तराँ में बैठे थे। एक बार जब चीनी मालिक पास से गुज़रा तो मैंने उससे चाय लाने का आग्रह किया तो उसने बड़ी रुखाई से 'नो टी, नो टी,' कहा और बड़बड़ाता हुआ दूसरी ओर चला गया। मुझे आग लग गई । अपने ही शहर में हमारे साथ यह सलूक हो, मुझे यह असह्य लगा। मैं उठकर चीनी मालिक के पास जाने ही वाला था कि मेरे अध्यापक ने मुझे रोक दिया और मुझे पकड़ कर बाहर ले गया।

यह उसका रेस्तराँ है, हमारा नहीं है, उसका अधिकार है कि किसे सर्व करे और किसे न करे। मैं चुपचाप उसके साथ वहाँ से चला आया।

कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ मैं व्यापार करने लगा था। यह व्यापार मुख्यतः कपड़े का था। मेरे पिताजी के साथ विभिन्न कारखानों की एजेन्सियाँ थीं। हम कपड़े के व्यापारियों से आर्डर लेकर कारखानेदारों को भेजते और माल आ जाने पर हमें कमीशन मिलता था। सीधा-सा काम था।

एम.ए. पास करने के बाद एजेन्सी के काम की दुश्वारियाँ वही जानता है, जिसने यह करके देखा है। मैं ऐसे कॉलेज में पढ़कर लौटा था जहाँ अंग्रेजीपन का माहौल था ; अधिकांश लड़के सरकारी अफसर बनने के सपने देखते थे। व्यापार-व्यवसाय के लिए इस प्रकार की शिक्षा बहुत बड़ी रुकावट थी। मुझे यह विचार सताता तो नहीं था। स्कूल छोड़ने पर एक ऐसे व्यक्ति से साक्षात्कार हुआ जिसने मेरी दुनिया बदल दी। वह भी गोरा-चिट्टा, स्वस्थ, सौम्य, सुन्दर व्यक्ति था। कॉलेज के पहले वर्षों में वह मेरे अंग्रेजी के अध्यापक थे। इस आदमी

KTBS Not to be republished

ने मुझे उस दकियानूसी, संकीर्ण, घुटन भरे वातावरण में से खींच कर बाहर निकाल लिया। उसी के प्रभावाधीन मैं साहित्य-रचना में कलम आजमाई करने लगा था।

अपने शहर लौटने पर माहौल बहुत कुछ बदला हुआ था। दूसरे विश्वयुद्ध के बादल घिरने लगे थे और देश में राजनीतिक हलचल तेज़ होती जा रही थी। मैं अभी अपने अध्यापक के चरण-चिह्नों पर चल रहा था, हालाँकि परिस्थितियाँ व्यापार के लिए नकारा साबित हो रही थीं। दिन-प्रतिदिन वह मेरी छाती का बोझ बनता जा रहा था। एम.ए. की तालीम ही नहीं, तरह-तरह के मानसिक गुंझल मेरे रास्ते के रोड़े बन रहे थे। उनमें से एक मेरा आदर्शवाद भी था।

दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ने की देर थी कि बाज़ार तेज़ होने लगा। लोग सैकड़ों कमा रहे थे। मुझसे व्यापारी कहते कि जहाँ पचास गाँठे दूकानदारों के लिए बुक करते हो, वहाँ दस गाँठे अपने लिए भी बुक कर लिया करो। पर मैं 'ईमानदार' बना घूमता था। साधन और साध्य का ताल-मेल बिठा रहा था।

वास्तव में मैं खाते-पीते परिवार में से था, चलते व्यापार में दाखिल हुआ था। मैंने बड़े उत्साह के साथ शुरू किया, लेकिन दिमाग पर साहित्य के अतिरिक्त गाँधीवादी विचारों का भी रंग चढ़ा हुआ था।

उन्हीं दिनों एक और भावना परेशान करने लगी थी। उन्नीस सौ बयालीस (1942) का आन्दोलन शुरू हो चुका था और अखबारों की खबरें बेहद उत्तेजित करने वाली थीं। बम्बई में प्रस्ताव पास होने के बाद जब नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया तो सारे देश में जैसे भूचाल आ गया था।

गाँधीजी को सेवाग्राम में बहुत निकट से देख चुका था। उनसे दो बातें भी कर चुका था। मेरे जैसे लाखों युवकों के दिल इस आन्दोलन के साथ धड़कते थे। आन्दोलन शुरू होने की देर थी कि हमारे शहर में भी पकड़-धकड़ शुरू हो गई। मेरे लिए चुपचाप घर पर बैठना असंभव हो रहा था। मैं और तो कुछ नहीं कर पाया - मैंने खादी का कुर्ता पहनना शुरू कर दिया। खादी का कुर्ता-पाजामा पहने मैं सड़कों पर घूमता, अन्दर ही अन्दर इस उम्मीद से

KTBS Not to be republished

कि पुलिसवाले इसीको मेरा विद्रोह मानकर मुझे गिरफ्तार कर लेंगे। मुझे किसी ने नहीं पकड़ा और मेरा आन्दोलन खादी का बाना पहनने तक ही सीमित रहा। मुझे इसी बात से थोड़ा-बहुत संतोष मिलने लगा था कि व्यवहार के स्तर पर तो कहीं ज़रूर उन लोगों के साथ जुड़ गया हूँ, जो देश की आज़ादी के लिए अपनी जान पर खेल रहे हैं और जब मसला साफ हुआ, जंग खत्म हुई, कांग्रेस के दफ्तर फिर से खुलने लगे तो मैं सीधे कांग्रेस का काम करने लगा।

दिन बीतने लगे। उन दिनों मैं एक ही समय में तीन-तीन काम कर रहा था। कॉलेज में ऑनरेरी तौर पर पढ़ाता, बाज़ार में व्यापार करता और साथ में कांग्रेस का काम।

मार्क्सवादी विचारधारा की ओर रुझान भी इन्हीं दिनों हुआ।

घर में साहित्यिक वातावरण पहले से था। पिताजी शेख-सादी के प्रेमी थे; माँ के पास कहानियों, गीतों, लोकोक्तियों का खजाना था। इसके अतिरिक्त बड़े भाई कॉलेज के दिनों में अंग्रेजी में और कॉलेज के बाद हिन्दी में बाकायदा लिखने लगे थे। व्यापार के सिलसिले में कानपुर जाते समय मैं अक्सर दिल्ली में रुका करता था। मेरी बुआ की बेटी, श्रीमती सत्यवती मलिक का घर साहित्य केन्द्र-सा बना हुआ था। यहीं पर उन्हीं दिनों अनेक रचनाएँ पढ़ने को मिलीं।

इस तरह धीरे-धीरे मैं इस क्षेत्र की ओर खिंचता चला गया। उन दिनों 'विशाल भारत' और 'हंस' हिन्दी के प्रमुख पत्र माने जाते थे। उनमें अपने लेख आदि भेजने लगा। फिर भी साहित्यिक काम छुट-पुट ही रहा । बँटवारे के बाद जब अपना शहर छोड़कर दिल्ली को अपना घर बनाया तो अधिक नियमित रूप से लिखने लगा।

साहित्य के क्षेत्र में भी मेरे अनुभव वैसे ही सपाट और सीधे-सादे ही रहे जैसे जीवन में। मैं समझता हूँ, अपने से अलग साहित्य नाम की कोई चीज़ भी नहीं होती। जैसे मैं हूँ, वैसे ही मैं रचनाएँ भी रच पाऊँगा। मेरे संस्कार, अनुभव, मेरा व्यक्तित्व, मेरी दृष्टि सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते हैं।

******

Not to be republished © NCERT

पाठ का आशय :

समाज और साहित्य का अन्योन्याश्रित संबंध है। प्रस्तुत पाठ में लेखक भीष्म साहनी के वैयक्तिक जीवन के अनुभव और तत्कालीन परिस्थितियों का यथावत् निरूपण हुआ है। साहनी जी का बचपन, उनकी अस्वस्थता, घर का साहित्यिक वातावरण, आर्थिक परिस्थितियाँ, विद्यालय और महाविद्यालय के अध्यापकों का प्रभाव - इत्यादि का यथार्थ चित्रण है। साहनी जी ने किस तरह गाँधीजी और राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित हुए, उसका भी सही दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है।

लेखक परिचय :

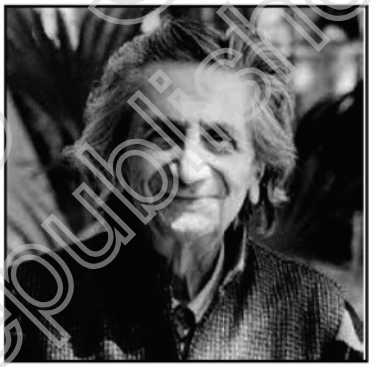

भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 ई. को रावलपिंड़ी में हुआ था। उन्होंने उर्दू एवं अंग्रेजी की स्कूली शिक्षा के बाद गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. और पंजाब विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं में उत्कृष्ट रचनाएँ हिन्दी जगत् को अर्पित की है। 'तमस' नामक उपन्यास पर उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं -

कहानी-संग्रह - भाग्यरेखा, पहला-पाठ, भटकती राख, पटरियाँ, निशाचर।

नाटक - हानुश, कबिरा खड़ा बाज़ार में, माधवी, मुआवज़ा ।

उपन्यास - झरोखे, कड़ियाँ, तमस, वसंती, कुंतो ।

शब्दार्थ :

माहौल-वातावरण, अक्सर-प्रायः, सरकना-खिसकना, धीरे-धीरे बढ़ना; सिरहाना -चारपाई में सिर की ओर का भाग, रेजगारी-रेजगी, छोटे सिक्के; झुटपुटा-संध्या का वह समय जब समान रूप से प्रकाश और अंधेरा हो, अवसाद-विषाद, खेद;

KTBS Not to be republished

पीलिमा-पीला रंग, रक्त की कमी; पुती रहना-जमना, लगना; करतब-काम, कार्य, बहादुरी; चकित-आश्चर्य, सुभीता-सुगमता, सहूलियत, आसान; मथना-कचोटना, दुख, कसक, विचलित करना; चुकना-समाप्त होना, पायदान-पैर रखने का आधार, सीढ़ी; लाँघना-पार कर जाना, नज़ारे-दृश्य, बंदिश-रोक, प्रतिबंध; अछूता-जो छुआ न गया हो, प्रभावित हुए बिना; अवसर-प्रसंग, खचाखच-ठसाठस, बहुत भरा हुआ; आग्रह-प्रार्थना, रुखाई-नीरस, रूखापन, खुश्की; आग लग जाना-गुस्सा आना, सलूक-बरताव, व्यवहार, आचरण; दुश्वारियाँ-कठिनाइयाँ, साक्षात्कार-भेंट, मुलाकात; सौम्य-शांत, दकियानूसी-बहुत पुराना, संकीर्ण-संकुचित, छोटा; प्रभावाधीन-प्रभाव में, प्रभाव के वश में; आजमाना-परीक्षा करना, परखना; हालाँकि-फिर भी, नकारा-निरुपयुक्त, व्यर्थ, अयोग्य; छाती का बोझ-कष्ट, भार; तालीम-शिक्षा, विद्रोह-क्रांति, रोड़ा-विघ्न, बाधा; दाखिल-प्रवेश, रंग चढ़ना-प्रभावित होना, अखबार-समाचार पत्र, उत्तेजित करना-प्रेरणा देना, प्रोत्साहन देना; भूचाल-भूकंप, बाना-पहनावा, पोशाक; मसला-समस्या, जंग-युद्ध, दफ्तर-कार्यालय, कचहरी; रुझान-झुकाव, बाकायदा-नियमित रूप से, बुआ-पिता की बहन, छुट-पुट-छोटा मोटा, कम; सपाट-समतल, साधारण।

अभ्यास

I. मौखिक प्रश्न :

1. लेखक का बचपन किससे वंचित था ?
2. लेखक बिस्तर पर से उठते ही क्या करते थे ?
3. कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ लेखक किस चीज़ का व्यापार करते थे ?
4. लेखक के दिमाग पर साहित्य के अतिरिक्त किनका प्रभाव था ?
5. लेखक के पिताजी किसके प्रेमी थे ?
6. लेखक की बुआ की बेटी का नाम क्या था ?

K-TBS Not to be republished

II. लिखित प्रश्न :

अ. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. भीष्म साहनी और उनके अध्यापक कहाँ सैर कर रहे थे?
2. रेस्तराँ का मालिक कौन था?
3. भीष्म साहनी की माता के खजाने में क्या-क्या भरा हुआ था?
4. लेखक ने गाँधीजी को निकटता से कहाँ देखा था?
5. लेखक के भाई किन भाषाओं में बाकायदा लिखते थे?

आ. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. भीष्म साहनी जी अन्य बालकों से क्यों जलते थे?
2. भीष्म साहनी को रेस्तराँ के मालिक का व्यवहार क्यों असहनीय लगा?
3. अंग्रेजी अध्यापक से भीष्म साहनी को कैसी प्रेरणा मिली?
4. साहनी जी ने किस उद्देश्य से खादी पहनना शुरू किया?
5. साहित्य के संबंध में साहनी जी का राय क्या है?

इ. चार-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. साहनी जी अपनी निःसहायकता मिटाने के लिए क्या-क्या करते थे?
2. भीष्म साहनी का स्वाभिमान दर्शानेवाली एक घटना के बारे में लिखिए ।
3. भीष्म साहनी के घर के साहित्यिक वातावरण का परिचय दीजिए।

ई. रिक्त स्थानों को सही शब्दों से भरिए :

1. देश के बदलते माहौल से भी मैं ..... नहीं रह गया था।
2. श्रीमती सत्यवती मलिक का घर ..... सा बना हुआ था।

K.T.B.S. Not to be republished

3. भीष्म साहनी की बुआ की बेटी ..... थी।

4. भीष्म साहनी के समय पर ..... और ..... हिन्दी के प्रमुख पत्र माने जाते थे।

उ. उदाहरणानुसार सही अर्थवाले शब्द चुनकर लिखिए :

(शिक्षा, क्रांति, कार्यालय, गतिविधि, समझना)

उदा : अवगत होना – समझना

1. हलचल - .....
2. तालीम - .....
3. विद्रोह - .....
4. दफ्तर - .....

ऊ. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

1. शाम - ....
2. माल - ....
3. दुनिया - ....
4. बोझ - ....
5. उम्मीद - ....

ऋ. उदाहरण के अनुसार लिखिए :

		कारक चिह्न	कारक के भेद
1.	**अध्यापक ने मुझे रोक दिया।**	**ने**	**कर्ता**
2.	मैं उन्हें केवल चकित आँखों से देख सकता था।	.....	.....

K T B S Not to be republished

3. रेस्तराँ का मालिक कोई चीनी व्यक्ति था।

....

4. खाट पर पड़ा सरकती धूप को देखता रहता ।

....

5. माँ की गोद में सिर रखकर अपार सुख मिलता था।

....

ए.नीचे दिए गए शब्दों में उपसर्ग/प्रत्यय जोड़कर नये शब्द बनाइए:

(उपसर्ग/प्रत्यय : जी, वि, कार, बे, इक, दार, अ)

.....	+	स्वस्थ
राजनीति	+	.....
.....	+	रोज़गारी
.....	+	द्रोह
गाँधी	+	.....
दूकान	+	.....
.....	+	संभव
साहित्य	+	.....

III. परियोजना :

- अन्य महान व्यक्तियों की आत्मकथाओं की सूची तैयार कीजिए ।

पाठ से आगे -

- गाँधीजी की 'मेरी आत्मकथा' और ए.पी.जे.अब्दुल कलाम की 'अग्नि की उड़ान' आत्मकथा पढ़िए ।

******

K T B S Not to be republished